आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:08-12-14

बेहद का बाप जो है, जैसा है उसे ऐक्यूरेंट समझकर, बेहद के बाप के लव में लवलीन रहने वाले बच्चों प्रति बाप ने कहा, जो बाप को यथार्थ जानकर याद करते हैं, दिल से बाप की महिमा करते हैं, जिसका पढ़ाई पर पूरा ध्यान है उन्हें ज्ञान का उल्टा नशा नहीं चढ़ सकता. वह सदा अपार खुशी व नशे में रहते है. बेहद के बाप से उनकी प्रीत बुद्धि होती है. उनके लिए ही गायन है प्रीत बुद्धि विजयंती.

हम सब ब्राह्मण आत्माये अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार बाप को पहचानते तो जरूर है. लेकिन बाबा ने बताया है वह जो है और जैसा है उसे ऐक्यूरेंट पहचान ने वाले बहुत थोड़े विरले हैं. जो बच्चे बाप को अच्छी तरह से जानते है, तो जरूर उसकी कही श्रीमत् को भी वह ऐक्यूरेंट फालो करते है यानी बाप का कहा मानते है. ऐसे बच्चों ने ही बाप को अपने दिल में भी समाया है या कहे बाप को अपना बनाया हैं. इसे ही कहा जाता है जाना, माना और अपना बनाया. ऐसे बच्चे बाप से सदा प्रीत बुद्धि बन सदा अपार खुशी व नशे में रहते है.

आज की मुरली में बाबा ने अपना परिचय हम बच्चों को दिया है, उस महा-वाक्यों को फिर से पढ़ेंगे तो उससे बेहद के बाप की याद पक्की होती जायेंगी.

- बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं - बच्चे, जब कोई नया आता है तो उनको पहले हद और बेहद, दो बाप का परिचय दो. बेहद का बाबा माना बेहद की आत्माओं का बाप. वह हद का बाप तो हरेक जीव आत्मा का अलग है.

- बाबा कहते है कोई तो बाबा को कितना अच्छा-अच्छा सर्विस समाचार लिखते है. बाप भी समझते, बच्चा जीता है. बाप को समाचार देते है तो बाप भी याद करते है, याद से याद मिलती है.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चे बाप को यथार्थ जानकर याद करते हो, दिल से बाप की महिमा करते हो.

- बाबा कहते है भगवानुवाच, मैं तुम्हें विश्व की राजाई देने के लिए राजयोग सिखलाता हूँ. बच्चों को यह नशा रहे कि हम विश्व की बादशाही लेने के लिए बेहद के बाप से पढ़ते है तो बच्चों को अपार खुशी का पारा सदा चढ़ा रहे.

- बाबा कहते है मैं खुद अपनी पहचान देता हूँ. मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ. जैसे तुम चित्र में देखते हो आत्मा और परमात्मा का रुप तो एक ही है, उसमें फ़र्क नहीं. आत्मा और परमात्मा कोई छोटा-बड़ा नहीं. सभी आत्माये हैं, वह भी आत्मा है. वह सदा परमधाम में रहते है इसलिए उन्हें परम आत्मा कहा जाता है. तुम आत्माये जैसे आती हो वैसे मैं नहीं आता. मैं माता के गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ. मैं ड्रामा के अन्त में इस तन में आकर प्रवेश करता हूँ. यह बड़ी सहज बात है. फ़र्क सिर्फ इतना है जो बाप के बदले कृष्ण का नाम गीता में डाल दिया है. इस एकज भूल के कारण सभी मनुष्य पतित, कंगाल बन गये हैं.

- बाबा कहते है न मैं सर्वव्यापी हूँ, न कृष्ण सर्वव्यापी है. हर शरीर में आत्मा सर्वव्यापी है. मुझे तो अपना शरीर भी नहीं है. हर आत्मा को अपना-अपना शरीर है. नाम हर एक शरीर पर अलग-अलग पड़ता है. न मुझे अपना शरीर है और न मेरे शरीर का कोई नाम है. मैं तो बूढ़ा शरीर लेता हूँ तो इसका नाम बदलकर ब्रहमा रखा है. मेरा नाम ब्रहमा नहीं है. मुझे सदा शिव ही कहते हैं. मैं ही सर्व का सद्गति दाता हूँ. किसी भी आत्मा को सर्व का सद्गति दाता नहीं कहेंगे, परमात्मा के लिए ही कहेंगे की वह सर्व का सद्गति दाता है. आत्मा की ही दुर्गति और आत्मा की ही सद्गति होती है. परमात्मा की कभी दुर्गति होती है क्या?

- बाबा समझाते है तुम्हें देह मिलती है कर्म करने के लिए तो फिर कर्मातित अवस्था में कैसे रहेंगे? कर्मातित अवस्था कहा जाता है मुर्दे को. जीते जी मुर्दा अथवा शरीर से डिटैच. बाप तुमको शरीर से न्यारा बनने की पढ़ाई पढ़ाते हैं. शरीर से आत्मा अलग है. आत्मा परमधाम की रहने वाली है. आत्मा शरीर में आती है तो उसे मनुष्य कहा जाता है. शरीर मिलता ही है कर्म करने के लिए. एक शरीर छोड़ फिर दूसरा शरीर कर्म करने के लिए लेना ही है. शांति तो तब हो जब शरीर में नहीं है. मूलवतन में कर्म होता नहीं. यह सब राज (razz) बाप ही तुम्हें समझाते रहते हैं. ॐ शांति.